कैसे

वीरा लायल*

पता नहीं कैसे सूरज, चुपके से आ जाता है?
धीरे-धीरे पूरे जग में उजियारा फैलाता है।
पता नहीं कैसे सागर में लहर हिलोरे खाती है,
पानी की बूँदे बरखा बन जग में जीवन लाती है।
पता नहीं कैसे धीरे से हवा सुहानी बहती है,
''सबको' जीवन देना है'' कानों में यह कहती है।
पता नहीं कैसे चंदा, आसमान में आता है,
गर्मी से आजाद कराके शीतलता दे जाता है।
पता नहीं क्यों, हम बच्चे जल्दी नहीं बड़े होते?
वरना उत्तर पाने को, कक्षा में ही अड़े होते।

*केंद्रीय विद्यालय-2, जे.एल.ए, बरेली, उत्तर प्रदेश।